# जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख
धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मंदिर में उपयोग हेतु उपकरण
और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है

(पांडुशिला ,सिंघासन, छत्र, चवर प्रातिहार्य,जाप माला ,मंगल कलश, पूजा बर्तन ,चंदोवा,तोरण ,झारी ,

(शुद्ध चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किया जाता है )

नोट:-हमारे यहाँ घरो में उपयोग हेतु ,साधुओ के उपयोग हेतु ,
अनुष्ठानों में उपयोग हेतु शुद्ध घी भी आर्डर पर
उपलब्ध कराया जाता है

SOURABH KUMAR JAIN
9993602663
77229 83010
SOURABHJN1989@GMAIL.COM

।। मेरे भगवान ।।

# गुरू कृपा से बाँसुरी बना मैं तो ठेठ बाँस था।

संत शिरोमणी 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज



Printed at :
"NEO" Ajmer - Ph. 0145-2422291

प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धारक, वास्तुविद, पुरातत्त्व - सरंक्षी, नव तीर्थ - प्रणेता, साक्षात तीर्थ-स्वरूप, ज्ञान रथ के सारथी, विद्या गौ के सुदोग्धा, श्रमण संस्कृति - सूर्य, मिथ्यात्व भञ्जक, शान्ति-धारातिशय निदर्शक, श्रावक संस्कार शिविर जनक, जिज्ञासा - समाधान - प्रतिपादक, विद्धत्कल्पतरु, विद्यार्थि-पितृकल्प, आगम के यथार्थ उपदेष्टा, वर्तमान काल के समनतभद्र, समयसार - शिक्षक, भक्त-वत्सल, महोपकारी, महान्तपोमार्तण्ड, रिद्धि - सिद्धि भक्तामर मंत्रो के निदर्शक, ज्ञानध्यान तपोरक्त, प्रखर चिन्तक, तर्क - वाचस्पति, विपथ - गामि-चक्षुरुन्मीलक, वाग्भी, मनोज्ञ, ऋषिराज,

**निर्यापक श्रमण, जगत्पूज्य मुनि पुंगव**
**108 श्री सुधासागर जी महाराज**

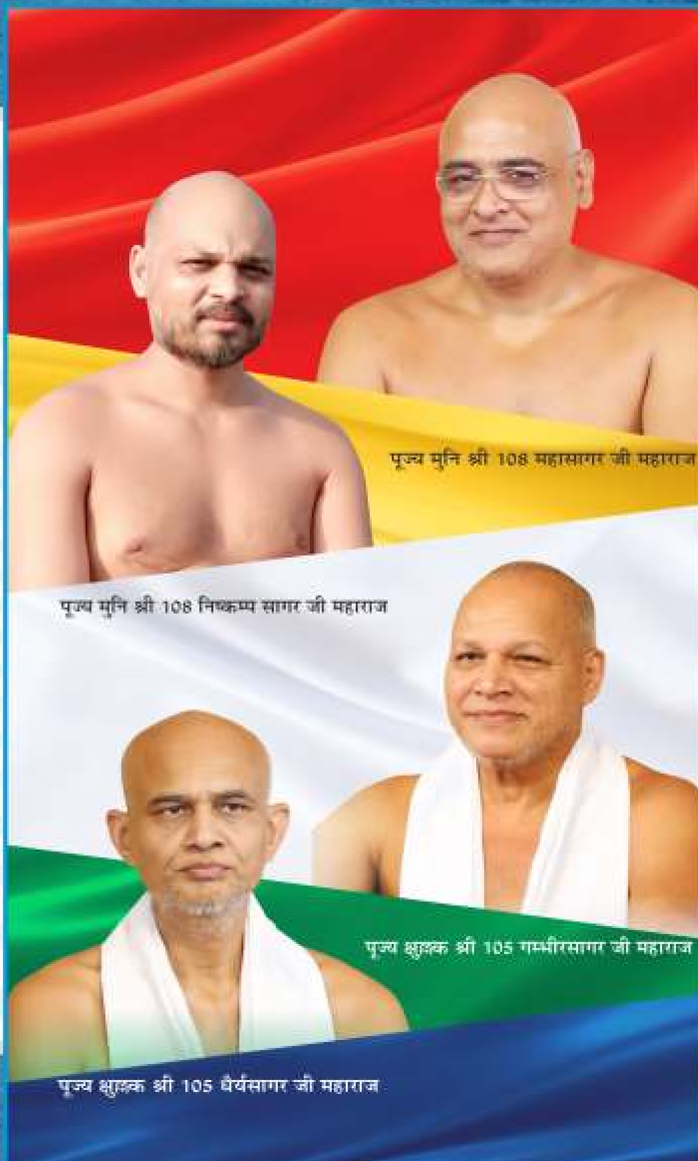
पूज्य मुनि श्री 108 महासागर जी महाराज
पूज्य मुनि श्री 108 निष्कम्प सागर जी महाराज
पूज्य क्षुल्लक श्री 105 गम्भीरसागर जी महाराज
पूज्य क्षुल्लक श्री 105 धैर्यसागर जी महाराज

# आचार्य श्री विद्यासागरजी

# छत्तीसी विधान

## महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागरजी का अर्घ

सीकर जिला जन्म राणोली, बालव्रती पण्डित ज्ञानी।
भूरामल ने लिखा 'जयोदय-महाकाव्य', अतिशय धानी ॥
फिर दीक्षा ले 'ज्ञान-सिन्धु' बन, रचे अनेकों ग्रंथ महाँ।
गुरु विद्यासागर चेतन कृति, रची सूरि अजमेर जहाँ ॥
शिवसागर के प्रथम शिष्य गुरु, ज्ञानसिन्धु के गुण गाते।
जिनके शिष्य हमारे गुरुवर, विद्यासागर कहलाते ॥
जिनने जीवन के अथ से ले, इति तक मुनि जीवन साधा।
उन ज्ञानोदधि सूरीश्वर को, झुका रहे हम मृदु माथा ॥1॥

ओं ह्रूँ षट्त्रिंशद्गुणसमन्वित-आचार्यश्रीज्ञानसागरमुनीन्द्राय अर्घं निर्वपा०।

## महाकवि आचार्य श्री विद्यासागरजी छत्तीसी विधान प्रारंभ

### जिनगीतिका छन्द

**लय-प्रभु पतित पावन................।**

आचार्य पाठक साधु के गुण, धारते आचार्य हैं।
श्री मूकमाटी के प्रणेता, लोक विश्रुत आर्य हैं ॥
छत्तीस गुणधारी सुगुरु की, अर्चना हम कर रहे।
आचार्य विद्यासागरं भज, धन्य हो जय कर रहे ॥

**दोहा**

लोक पूज्य गुरुदेव की, पूजा मंगलकार।
विद्यासागर सूरि का, करूँ हृदय अवतार ॥

ओं ह्रूँ षट्त्रिंशद्गुणसमन्वित-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्र! अत्र अवतर 2 संवौषट् आह्वानम् ! अत्र तिष्ठ 2 ठ: ठ: स्थापनम्! अत्र मम सन्निहितो भव 2 वषट् सन्निधीकरणम्!

धर्मापगा का नीर निर्मल, चित्त का कर्दम हरे।
जन्मादि दोष निवारने को, नीर से अर्चन करें ॥
छत्तीस गुणधारी सुगुरु की, अर्चना हम कर रहे।
आचार्य विद्यासागरं भज, धन्य हो जय कर रहे ॥

**ओं ह्वूँ षट्त्रिंशद्गुणसमन्वित-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय जलं नि. स्वाहा।**

चारित्र के चन्दन मुनीश्वर, पाप ताप निवारते।
तन-तापहारी गंध ले हम, पूजते सुख धारते ॥
छत्तीस गुणधारी सुगुरु की, अर्चना हम कर रहे।
आचार्य विद्यासागरं भज, धन्य हो जय कर रहे ॥

**ओं ह्वूँ षट्त्रिंशद्गुणसमन्वित-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय चंदनं नि. स्वाहा।**

गुण मोतियों से कण्ठ शोभित, सूरि गुरु की वंदना।
मोती सदृश शुचि तन्दुलों से, आज करते अर्चना ॥
छत्तीस गुणधारी सुगुरु की, अर्चना हम कर रहे।
आचार्य विद्यासागरं भज, धन्य हो जय कर रहे ॥

**ओं ह्वूँ षट्त्रिंशद्गुणसमन्वित-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अक्षतान् नि0।**

जिन सिद्ध प्रभु ने काम जीता, जीतते गुरुवर यहाँ।
मुनि संघ सह गुरु को भविक जन, पुष्प से पूजें महाँ ॥
छत्तीस गुणधारी सुगुरु की, अर्चना हम कर रहे।
आचार्य विद्यासागरं भज, धन्य हो जय कर रहे ॥

**ओं ह्वूँ षट्त्रिंशद्गुणसमन्वित-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय पुष्पं निर्वपा0।**

परिषह क्षुधादिक जीतने गुरु , जब कभी अनशन करें।
नैवेद्य से गुरु पूजकर हम, भक्त एकाशन करें ॥
छत्तीस गुणधारी सुगुरु की, अर्चना हम कर रहे।
आचार्य विद्यासागरं भज, धन्य हो जय कर रहे ॥

**ओं ह्वूँ षट्त्रिंशद्गुणसमन्वित-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नैवेद्यं निर्वपा0।**

निजपर प्रकाशक त्रय रतन को, धारते यति सूरि हैं।
गुण रत्न पाने दीप लेकर, पूजते हम भूरि हैं ॥
छत्तीस गुणधारी सुगुरु की, अर्चना हम कर रहे।
आचार्य विद्यासागरं भज, धन्य हो जय कर रहे ॥

ओं ह्रूँ षट्त्रिंशद्गुणसमन्वित-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय दीपं निर्वपा०।

गुरु ध्यान की ज्वाला उठा के, कर्म दहते नित्य हैं।
हम गुण सुरभि पाने चढ़ाते, धूप सुरभि अनित्य हैं ॥
छत्तीस गुणधारी सुगुरु की, अर्चना हम कर रहे।
आचार्य विद्यासागरं भज, धन्य हो जय कर रहे ॥

ओं ह्रूँ षट्त्रिंशद्गुणसमन्वित-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय धूपं निर्वपा०।

शुभ अशुभ विधि फल में मुनीश्वर, हर्ष खेद नहीं करें।
वसु कर्महारी साधना से, कर्म दह कर शिव वरें ॥
छत्तीस गुणधारी सुगुरु की, अर्चना हम कर रहे।
आचार्य विद्यासागरं भज, धन्य हो जय कर रहे ॥

ओं ह्रूँ षट्त्रिंशद्गुणसमन्वित-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय फलं निर्वपा०।

गुरुदेव मेरे भक्ति से नित, भज रहे पुरुदेवता।
हम भक्त वसु विध द्रव्य लेकर, पूजते गुरुदेवता ॥
छत्तीस गुणधारी सुगुरु की, अर्चना हम कर रहे।
आचार्य विद्यासागरं भज, धन्य हो जय कर रहे ॥

ओं ह्रूँ षट्त्रिंशद्गुणसमन्वित-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपा०।

## प्रथम वलय अर्घावली

### ज्ञानोदय छन्द

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण तप, वीर्याचार सुहाते हैं।
जिस पर चलकर गुरु सूरीश्वर, श्रमण समूह चलाते हैं ॥
गुण छत्तीस धारते गुरुवर, दीक्षा शिक्षा गुण आगर।
चार संघ मणियों के नायक, जयवंतो विद्यासागर ॥

।अथ मण्डलोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

### ज्ञानोदय+दोहा

मोहतिमिर हरने से गुरुवर, सम्यग्दर्शन युक्त हुए।
तथा दोष पच्चीस नाश के, दर्शन विशुद्धि युक्त हुए ॥

निःशंकित आदिक वसु गुण की, रक्षा में नित तत्पर हो।
शुद्ध भाव में निरत सूरिवर, विद्यासागर गुरुवर हो ॥
प्रथम दर्श आचार युत, गुरु को अर्घ चढ़ाय।
वह अनंत भव छेदकर, कभी न जग में आय ॥1॥

ओं ह्रूँ दर्शनाचारनिरत-आचार्यश्रीविद्यासागरगणीन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

संशय विमोह विभ्रम के बिन, स्वपर ज्ञान से पूरित हो।
आप्तागम की दृढ़ प्रतीति युत, इच्छाओं से दूरित हो ॥
दीक्षा शिक्षा दण्ड प्रदाता, आचार्यों में श्रेष्ठ महाँ।
चिरदीक्षित आचार्य शिरोमणि, विद्यासागर ज्येष्ठ यहाँ ॥
ज्ञानमूर्ति गुरुदेव का, जिनवाणी पर ध्यान।
वे मुझको सद्ज्ञान दें, हरें मोह अज्ञान ॥2॥

ओं ह्रूँ ज्ञानाचारनिरत-आचार्यश्रीविद्यासागरगणीन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निजस्वभाव में रहने वाले, धुरा महाव्रत की धारें।
गुण रूपी रत्नों से भूषित, द्विविध चरित अविरल पालें ॥
मूलगुणों युत त्रिगुप्ति धारें, पंचसमितियों को पालें।
ज्ञानसागराचार्य स्व गुरु को, सूरीश्वर उर में धारें ॥
विरत समिति इन्द्रिय विजय, आवश्यक गुणशेष।
गुप्ति युक्त गुरुदेव का, पूजन करूँ विशेष ॥3॥

ओं ह्रूँ चारित्राचारनिरत-आचार्यश्रीविद्यासागरगणीन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्याभ्यंतर तप करने को, सुमेरु गिरि सम अचल तने।
तप से दृग अवगाढ़ बनाते, साधु संघ में विमल बने ॥
कभी बाह्य तप अनशनादि में, कभी लगे अंतर तप में।
तपश्चरण से शिवपद साधें, उन्हें नमूँ अंतर जप में ॥
शिव सुख के उद्देश्य से, तप तपते बहिरंग।
अन्तरंग के हेतु बन, विधि क्षय करें निसंग ॥4॥

ओं ह्रूँ तपाचारनिरत-आचार्यश्रीविद्यासागरगणीन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्म साधना में अतिशय दृढ़, योग रक्षणें जाग्रत हों।

दुष्ट मनुज तिर्यंच देवकृत, उपसर्गों में व्यथित न हों ॥
क्षुधा तृषादिक परीषहों को, सदा सहन करने वाले।
पंच वीर्याचार सम्हालें, विद्यासागर हित वाले ॥
दर्श बोध चारित्र में, फिर तप में संचार।
सूरि वीर्य अनुसार ही, पालें सब आचार ॥5॥

ओं ह्रूँ वीर्याचारनिरत-आचार्यश्रीविद्यासागरगणीन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ

प्रियधर्मी हो दृढ़धर्मी हो, पापभीरु तुम यतिवर हो।
बहु शतकों में संघ आर्यिका, पास न रखते हितकर हो ॥
जैसे आगम में बतलाये, वैसे पाये हैं गणधर।
मर्यादा में करें अनुग्रह, गणी श्रेष्ठ विद्यासागर ॥

ओं ह्रूँ पंचाचारनिरत-आचार्यश्रीविद्यासागरगणीन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

# द्वितीय वलय

दोहा

कर्म निर्जरा हेतु जो, तप करते मुनिराज।
ऐसे गुरु की अर्चना, सफल करे हितकाज ॥

। अथ मण्डलोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

ज्ञानोदय+दोहा

गुरुवर कभी एक द्वय आदिक, नव दिन तक अनशन साधें।
मन इन्द्रिय कृत दोष निवारें, आत्म शुद्धि को आराधें ॥
विधि क्षय करने परिषह सहने, बेला तेलादिक करते।
संयम ध्यान ज्ञान वर्द्धन हित, मोक्ष हितैषी तप धरते ॥
अनशन तप के ताप से, कर्म जरें झर जाय।
विधि झरने से सूरिवर, इक दिन शिवसुख पाय ॥6॥

ओं ह्रूँ अनशनतपधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

एक ग्रास से एक ग्रास कम, यथा प्रयोजन भिक्षा लें।
वात पित्त कफ दोष नष्ट हों, मन इन्द्रिय वश में कर लें ॥

सुखपूर्वक स्वाध्याय ध्यान हो, यतिवर निद्रा विजय करें।
संयम जागृति क्षुधा तृषा हर, ऊनोदर तप सूरि धरें ॥
ऊनोदर तप ताप से, कर्म बंध मुरझाय।
राग सलिल के बिन गणी, इक दिन मोक्ष लहाय ॥7 ॥

ओं ह्रूँ अवमौदर्यतपधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

इक गृह का तो मुख्य नियम लें, अन्य नियम भी गुरु रखते।
दाता में नर नारी वृद्धा, युवा आदि की विधि लखते ॥
भाजन में सोना चाँदी के, वर्तन से जो पड़गाहे।
भोजन में यदि दाल दिखे तो, भिक्षा लेना व्रत चाहे ॥
राग द्वेष से बचने गुरुवर, इस प्रकार विधि अपनाते।
पुण्य कहाँ किसका भारी है, पक्ष रहित हो सुख पाते ॥
वृत्ति परीसंख्यान तपों से, आशा का परिहार करें।
और धर्म तप की महिमा का, गुरु जग में विस्तार करें ॥
आशा के परिहार हित, गणी गहें संकल्प।
निरीह वृत्ति हो आचरें, रहे न भोज्य विकल्प ॥8 ॥

ओं ह्रूँ वृत्तिपरिसंख्यानतपधारक-आचार्यश्रीविद्यासागराय अर्घं।

पय दधि घृत गुड़ तैल लवण ये, षड्विध भोजन के रस में।
खट्टे मीठे कटुक कषायल, तिक्त चरपरे पन रस में ॥
गुरुवर मात्र एक घृत रस लें, शेष सभी रस परिहारें।
रसना विजयी मेरे गुरुवर, महान संयम को धारें ॥
रसनेन्द्रिय को जीत गुरु, आत्म विजय वर पाय।
तब निज में समरस झरे, सब रस नीरस भाय ॥9 ॥

ओं ह्रूँ रसपरित्यागतपधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

अप्रमत्त हो शयन वसन हित, और ठहरने स्थान चुनें।
नारी नपुंसक आदि रहित थल, निर्जन में अघ ध्वान्त हनें ॥
विविक्त जो एकान्त रहा है, वहाँ शयन आसन माँड़ें।
निर्विकार निर्भय हो तपधर, ब्रह्मचर्य असि ले ठाड़े ॥

विविक्त शय्यासन रहा, आत्म ध्यान का केन्द्र।
ध्यान करें शुद्धात्म का, बनने सूरि जिनेन्द्र॥10॥

ओं ह्रूँ विविक्तशय्यासनतपधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

ग्रीष्म काल में कुण्डलगिरि पर, शीत अमरकटंक थल में।
वर्षाकाल तीर्थक्षेत्रों पर, त्रियोग धारें सम तल में॥
इस विधि गुरु प्रतिकूल दशा में, योग धरें आनन्दित हों।
ऐसे गुरुवर विद्यासागर, देह कष्ट में प्रमुदित हों॥
तीनों योगों में गणी, धरते समता भाव।
काय क्लेश तप धारते, हरते सकल विभाव॥11॥

ओं ह्रूँ कायक्लेशतपधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

जिससे पूर्व पाप कट जाते, ऐसे प्रायश्चित्त करें।
आलोचन प्रतिक्रम तदुभय फिर, विवेक फिर व्युत्सर्ग वरें॥
छेद मूल परिहार रहे नव, वा श्रद्धान दशम धारें।
भिन्न भिन्न अघ इनसे दहते, साधु दण्ड विधि उर धारें॥
भिन्न भिन्न कृत दोष में, भिन्न भिन्न दें दण्ड।
उद्दण्डों को वश करें, ज्ञानी सूरि अदण्ड॥12॥

ओं ह्रूँ दशविधप्रायश्चित्ततपधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमःअर्घं।

दर्शन ज्ञान चरित्र विनय तप, और विनय उपचार कही।
पाँच विनय पंचम गति नायक, सूरि धरें गुण सार यही॥
विनय भाव से गुरु आज्ञा को, आप पालते खिलते हो।
गुरु आस्था का दीप निरन्तर, पग पग लेकर चलते हो॥
सभी गुणों में अग्रणी, विनय मोक्ष का द्वार।
कीरत फैले विश्व में, करे मित्र विस्तार॥13॥

ओं ह्रूँ पंचविधमोक्षविनयतपधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

आचार्यो-पाध्याय प्रवर्तक, तथा स्थविर आधार गणी।
बाल वृद्ध युत संघ गच्छ में, विपत्ति हों तो निवारणी॥
शैक्ष तपस्वी साधु गुणाधिक, गण कुल इष्ट श्रमण सेवा।

दुर्बल रुग्ण साधु की सेवा, करते पाने गुण मेवा ॥
करते वैय्यावृत्य जो, निज पर का हित साध।
सूरीश्वर की अर्चना, देती सौख्य अगाध ॥14॥

ओं ह्रूँ पात्रानुसारदशविधवैय्यावृत्यतपधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अर्घं।

स्वाध्यायों से निज पर हित में, श्रुत प्रकाश करने वाले।
वाचन पृच्छन अनुप्रेक्षण कर, पाठ कथा करने वाले ॥
तत्त्वदर्शिनी कुतत्त्वहरिणी, पाप-भीति तन-विरति जहाँ।
सत्य कथायें कहने वाले, भजूँ सूरि विद्यार्य महाँ ॥
स्व-स्वभाव का अध्ययन, रहा शास्त्र स्वाध्याय।
द्रव्य भाव श्रुत धारते, पूजूँ गुरु अध्याय ॥15॥

ओं ह्रूँ पंचविधस्वाध्यायतपधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

नश्वर तन में ममत्व तजकर, उपकरणों में मोह तजें।
व्युत्सर्गासन पद्मासन में, आत्म विभव निर्मोह भजें ॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण में, निज की निधि में लीन रहें।
ऐसे गुरुवर विद्यासागर, ज्ञान ध्यान लवलीन रहें ॥
बाह्य उपधि छिलका सदृश, उपधि भीतरी लाल।
चावल गुण व्युत्सर्ग तप, सूरि नमूँ नत भाल ॥16॥

ओं ह्रूँ द्विविधव्युत्सर्गतपधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

आर्त्त रौद्र द्वय ध्यान त्यागकर, धर्म ध्यान में रत रहते।
करें भावना शुक्लध्यान की, गुरुवर निजानन्द लहते ॥
आर्त्त रौद्र से बचने गुरुवर सर्व संघ को शिक्षा दें।
मोक्षमार्ग पर बढ़ने भवि को, मुनि आर्या की दीक्षा दें ॥
शुक्ल ध्यान प्रत्यक्ष में, शिव सुख कारण होय।
सूरि बनें सिद्धातमा, प्रथम सर्व विधि खोय ॥17॥

ओं ह्रूँ आर्त्तरौद्ररहित-धर्मशुक्लध्यानतपनिरत- आचार्यश्रीविद्यासागराय नमः अर्घं।

महार्घ-समपादिका छन्द

तन मन को जो पूर्ण तपाते, आतम को छविमान बनाते।

तपाचार श्रमणों का बाना, गुरु अर्चा से पाप खपाना ॥

ओं ह्रूँ तपाचारधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः महार्घं नि0 स्वाहा।

# तृतीय वलय

**दोहा**

धर्म धर्मि रवि सम रहे, भविजन मुनिजन फूल।
गुरु अर्चा से फूलते, मिटते भव दुख शूल ॥

॥ अथ मण्डलोपरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

**ज्ञानोदय+दोहा**

क्रोध उदीरित करने वाले, यदि प्रत्यक्ष निमित्त मिलें।
सुर नर पशु कृत घोर उपद्रव, रौद्र प्राकृतिक अंग छिलें ॥
पर कलुषित परिणाम न करते, रहें शक्ति से युक्त भले।
ऐसे गुरुवर विद्यासागर, मोक्षमार्ग पर निकल पड़े ॥
क्षमा नाम धरती रहा, जल-मल धरे समान।
निंदा शंसा में गणी, क्षमामूर्ति सम मान ॥18 ॥

ओं ह्रूँ उपसर्गे सति क्षमाधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमःअर्घं।

उत्तम ज्ञान प्रधान तपोधन, तपश्चरण करते भारी।
संयम शील प्रखर हैं जिनके, ऋद्धि सिद्धि संबल धारी ॥
किन्तु सूरि अपने को लघुतम, मान रहे मार्दव धारी।
नहीं संघ की करें उपेक्षा, बनता शिव पथ सुखकारी ॥
हीरे मोती जड़ सकें, जब हो सोना नर्म।
त्यों मृदु गुण धर सूरि में, शोभित हों गुणधर्म ॥19 ॥

ओं ह्रूँ मानरहितश्रेष्ठज्ञानादिकगुणधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

मन से कुटिल न चिन्तैं गुरुवर, कुटिल न बोलें गुणनामी।
नहीं भूलकर तन से छलते, आर्जव धर्म धरें स्वामी ॥
अपने दोषों को गुरु -सम्मुख, प्रकट करें निश्छल मन से।
करूँ वंदना सूरीश्वर की, स्वयं भरूँ निश्छल धन से ॥
स्वर्ण पात्र में टिक सके, ज्यों सिंहनी का क्षीर।

निश्छल मन में सूरि के, टिकते गुण गंभीर ॥20॥

ओं ह्रूँ दोषरहित-आलोचनागुणसहितार्जवधर्मधारकाचार्यश्रीविद्यासागराय अर्घं।

यथेच्छ भोजन के मिलने पर, गृद्ध न हों सन्तुष्ट रहें।
भोजन यदि प्रतिकूल मिले तो, यथा लब्ध में तुष्ट रहें॥
तीव्र लोभ के मलिन पुँज को, शौच धर्म जल से धोते।
ऐसे निर्लोभी गुरुवर की, पूजा में निर्मल होते॥
भैक्ष्य शुद्धि आधार से, शुचि होता चारित्र।
गुरु पूजा से हम करें, मन वच काय पवित्र ॥21॥

ओं ह्रूँ उत्तमशौचधर्मधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

पर संतापक वचन निवारें, गुरुवर हितमित प्रिय बोलें।
शिष्यों को अनुशासित करने, अप्रिय भी कहते तोलें ॥
ज्ञान और वैराग्य बढ़ाते, शशि अमृत से बोल झरें।
ऐसे गुरुवर विद्यासागर, सत्य सुधा अनमोल धरें ॥
सत्य वचन बोलो सदा, कभी न हो मुखरोग।
मुनीश की गुण अर्चना, करती भक्त निरोग ॥22॥

ओं ह्रूँ उत्तमसत्यधर्मधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

इन्द्रिय संयम प्राणी संयम, द्विविध धर्म धारण करते।
मधुर रसों का वनस्पती का, हरी रूप वर्जन करते ॥
अग्नि पक्व भी शुचि फल त्यागें, शाक सब्जियाँ सभी तजें।
पंच समितियाँ पालें गुरुवर, जीव दया को नित्य भजें ॥
पतंग ज्यों डोरी सहित, रहती बालक हाथ।
त्यों संयत गुमता नहीं, धर्मसूत्र गुणसाथ ॥23॥

ओं ह्रूँ द्विविधसंयमधर्मधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

दोष निवारक बनें रसायन, ऐसे तप द्वादश विध हैं।
विधि बंधन से मुक्त करें ये, बाह्याभ्यन्तर द्वय विध हैं ॥
बाह्य तपन तो देहाश्रित है, अभ्यन्तर मन आश्रित है।
दोनों से चेतन शुचि होता, पूजूँ गुरु जो स्वाश्रित हैं ॥

मन की इच्छा रोक कर, धरते संयम धर्म।
विषयों के संस्कार को, उखाड़ देना कर्म ॥24॥

ओं ह्रूँ उत्तमतपधर्मधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

वीतराग निर्ग्रंथ श्रमण जन, द्विविध परिग्रह तज बनते।
जन परिजन से मोह त्याग कर, रत्नत्रय में नित सनते ॥
इष्ट गरिष्ठ मिष्ट रस त्यागें, लौकिक प्रार्थित उपधि तजें।
विद्यावारिधि त्यागमूर्ति को, सुर नर मुनि गुणजलधि यजें ॥
जग का जग को दे दिया, निज में रख संतोष।
हे गुरुवर! तव अर्चना, मुझे करे निर्दोष ॥25॥

ओं ह्रूँ उत्तमत्यागधर्मधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

बाह्य दृश्य यह मेरा नहिं है, नहीं किसी का मैं खुद हूँ।
आप अकेला तीन लोक में, जन्म मरण करता खुद हूँ ॥
तन मन कर्म पौद्गलिक सारे, मैं चेतन दृग ज्ञानमयी।
यह विचार कर बने अकिंचन, मैं पूजूँ गुरु ध्यानमयी ॥
जो अनादि से एक है, शुद्ध ज्ञान दृग रूप।
ज्ञान दीप में देखते, गुरुवर आत्म स्वरूप ॥26॥

ओं ह्रूँ उत्तमाकिंचनधर्मधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

जब अनादि से प्राप्त कर्म भी, विभाव हैं जड़ पुद्गल हैं।
कर्मों का फल विभावमय है, फिर तन क्यों नहिं पुद्गल है ॥
तब तन का सम्बन्ध आत्म से, शुचितम कैसे हो सकता?
धन्य ब्रह्म वृष रत गुरु का मन, मात्र चेतना को लखता ॥
गुरुवर तन का राग तज, रहें चेतना लीन।
ब्रह्मचर्य-रत सन्त को, पूजें भक्त प्रवीन ॥27॥

ओं ह्रूँ ब्रह्मचर्यकारकचिंतनधारक-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

महार्घ- ज्ञानोदय+दोहा

जीतें क्रोध क्षमा से गुरुवर, मारें मान नम्रता से।
माया त्यागें सरल भाव से, लोभ जीतते शुचिता से ॥

असत्य छोड़ें सत्य धर्म से, विजित असंयम संयम से।
तप से इच्छा, ग्रहण त्याग से, ममता तजें अकिंचन से ॥
ब्रह्मचर्य से कुशील नाशें, गुरु अधर्म तज धर्म धरें।
उत्तम क्षमादि दश धर्मों के, साधक शाश्वत शर्म वरें ॥
रत्नत्रय शृंगार किया है, और दिगम्बर रूप धरा।
ऐसे गुरुवर शिव सुख पाते, अजर अमर आनंद भरा ॥
धर्म गुणी की अर्चना, ऋद्धि सिद्धि दातार।
सुख समृद्धि दिन दिन बढ़े, जन्म मरण क्षयकार ॥

**ओं ह्रूँ उत्तमक्षमादिदशधर्मधारकाचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः महार्घं नि. स्वाहा।**

# चतुर्थ वलय

**दोहा**

छह ऋतुएँ तो वर्ष में, आवश्यक हर रोज।
महकें श्रमण विशुद्धियाँ, सूघें धर्म सरोज ॥

**। अथ मण्डलोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।**

**क्षमासखी छन्द**

**(तर्ज - मन भज ले प्रभु का नाम ............................)**

गुरु सकल व्रती बड़भागी, सुख दुख में समतापागी।
जीने मरने रिपु प्रिय में, समभाव रखें मुनि जिय में॥
संयोग वियोग भवन में, गुरु समता रखते वन में।
वे लाभ अलाभ सबन में, सम रहें काच कंचन में ॥
आवश्यक काल न टालें, गुरु निष्प्रमाद हो पालें।
चर्या से शिक्षा देते, सब शिष्य प्रेरणा लेते ॥28॥

**ओं ह्रूँ सामायिकावश्यकरत-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।**

चौबीस जिनेश्वर अर्चें, मन वच तन से अभ्यर्चें।
जिन नाम निरुक्ति उचरते, गुण कीर्तन कर दुख हरते ॥
जब गुरु जिनवर को ध्याते, तब राग द्वेष भग जाते।
प्रभु का उपकार बखाने, निज में उन सम गुण पाने ॥29॥

ओं ह्रूँ संस्तवावश्यकरत-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

अरहंत सिद्ध गुरु वन्दें, तप-श्रुतधर मुनि अभिनन्दें।
जो गुरु को वन्दन करते, वे भव का क्रन्दन हरते ॥
अरिहंत सिद्ध प्रतिमा को, गुरु झुकते निज शुचिता को।
मन वच तन त्रय शुचि करके, परमेष्ठि भजें सिर धरके ॥30॥

ओं ह्रूँ वंदनावश्यकरत-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

द्रव क्षेत्र जनित अपराधा, व्रत काल भाव कृत बाधा।
गुरु उनका शोधन करते, मन वच तन से अघ हरते ॥
निज साक्षी निंदा करते, गुरु सम्मुख गर्हा करते।
परमाद दोष झट टालें, प्रतिक्रम आवश्यक पालें ॥31॥

ओं ह्रूँ प्रतिक्रमणावश्यकरत-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

नव पाप बंध नहि करते, गुरु सब अयोग्य परिहरते।
नामादि अशुभ छह तजते, नव विध पापों से बचते ॥
अघ को त्रियोग से त्यागें, कृत कारित मोदन भागें।
यम नियम रूप कालों को, त्यागें पदार्थ सालों को ॥32॥

ओं ह्रूँ प्रत्याख्यानावश्यकरत-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

नियमों को निशदिन पालें, तन मोह तजे गुण धारें।
जिन गुण का चिंतन करते, कायोत्सर्गी अघ हरते ॥
पच्चिस उच्छ्वास प्रमाणा, सत बीस व शत वसु माना।
वर्षों से निज तन साधें, पन गुरु को नित आराधें ॥
आवश्यक रत गुरु ध्याऊँ, सविनय वसु द्रव्य चढ़ाऊँ।
जिनने आवश्यक धारे, उनको शिव रमा निहारे ॥33॥

ओं ह्रूँ कायोत्सर्गावश्यकरत-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

महार्घ -चौपाई

समय समय आवश्यक पालें, प्रमाद दोषों को गुरु टालें।
छह आवश्यक समयाचारी, करूँ वंदना मूलाचारी ॥

ओं ह्रूँ षडावश्यकपालननिरत-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

# पंचम वलय

**दोहा**

जब मन वच तन द्वार को, बंद किया सुखदाय।
तब निज के भंडार को, भीतर गुप्ति दिखाय ॥

**। अथ मण्डलोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।**

**ज्ञानोदय**

अशुभ विकल्पों संकल्पों से, मन को सदा बचाते हैं।
हितकारी शुभ धर्मध्यान में, मन को सदा लगाते हैं ॥
स्वयं धारते मनोगुप्ति को, शिष्यों से पलवाते हैं।
ऐसे गुरुवर विद्यासागर, सूरीश्वर मन भाते हैं ॥34॥

**ओं ह्रूं स्वपरहितकारिणीशक्तियुक्तमनोगुप्तिधारकाचार्यश्रीविद्यासागराय अर्घं ।**

अशुभ वचन न हि मुख से बोले, बोलें तो हित मित बोलें।
काय गुप्ति में रहने वाले, मौन रहें समरस घोलें ॥
संघों को निर्देशन देते, सूरीश्वर संकेतों में।
ऐसे गुरुवर विद्यासागर, रहते नियम निकेतों में ॥35॥

**ओं ह्रूं स्वपरहितकारिणीशक्तियुक्तवचोगुप्तिधारकाचार्यश्रीविद्यासागराय अर्घं ।**

अशुभ वृत्तियों को गुरु त्यागें, शुभ चेष्टायें भी रोकें।
काय गुप्ति से आस्रव रोकें, सूरि आत्म में लय होके ॥
चेष्टायें जब संयत होतीं, सभी शुभाशुभ कर्मों की।
तब गुरुवर विधि संवर करते, करें निर्जरा कर्मों की ॥36॥

**ओं ह्रूं स्वपरहितकारिणीशक्तियुक्तकायगुप्तिधारकाचार्यश्रीविद्यासागराय अर्घं ।**

**महार्घ - जिनगीतिका लय-प्रभु पतित पावन......।**

संसार कारण से बचातीं, गुप्तियाँ दुखहारिणी।
जो अशुभ आस्रव की निरोधी, पाप संवर कारिणी ॥
जो अशुभ से शुभ में लगाये, गुप्ति शुभ हितकारिणी।
फिर शुद्ध का साधन बनाये, श्रमण को शिवकारिणी ॥
गुरु गुप्तियों में गुप्त होकर, आतमा में रम रहे।

हम भक्त गुरु की अर्चना कर, पद कमल में नम रहे ॥

ओं ह्रूँ त्रिगुप्तिगुप्त-संवरनिर्जरातत्त्वसंयुक्ताचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अर्घं।

## यशोगान

शान्ति वीर शिव ज्ञान से, विद्यासागर आर्य।
यशोगान गुरुदेव का, सफल करे शुभ कार्य ॥

### ज्ञानोदय

कुन्दकुन्द भगवान सरीखे, परम्परा संवाहक हो।
त्याग तपस्या में तुम गुरुवर, सतयुग जैसे साधक हो ॥
आगम अनुसारी तव चर्या, श्रमण सु संस्कृति कीरत हो।
गुरुवर विद्यासागर तुम तो, चलते फिरते तीरथ हो ॥1॥
कुमार व्रत ले युवक युवतियाँ, यहाँ सहस्रों शिक्षित हैं।
इनमें मुनि आर्या के पद में, शतकों शतकों दीक्षित हैं ॥
वर्ष सहस्रों के जाने पर, भू पर जो इतिहास न था।
वह अभिलेख बाल यतियों का, विद्यासागर सूरि लिखा ॥2॥
वचनमयी चैतन्यमयी सब, रचनाएँ बुध अर्चित हैं।
रचित अनूदित प्यारी कृतियाँ, सौ ऊपर कवि चर्चित हैं ॥
महाकाव्य श्री '**मूकमाटी**' का, जग भर में सम्मान हुआ।
चलते-फिरते ग्रन्थालय का, विद्यासागर नाम हुआ ॥3॥
सबका उदय करे जिनशासन, सो 'सर्वोदय' तीर्थ बना।
सिद्धि प्राप्त हो 'सिद्धोदय' में, 'ज्ञानोदय' गुरु गीत सना ॥
तीर्थ 'दयोदय' गौ आदिक की, सेवा कर उपकार करे।
'भाग्योदय''पूर्णायु' रोग हर, मानव का उपचार करे ॥4॥
प्रतिभा-रत भारत होवे सो, 'प्रतिभा-स्थलीं' रचीं प्यारीं।
बाल सुशिक्षित सौ सौ बहनें, प्रति-प्रतिभा मण्डल न्यारीं ॥
प्रशासनादि महाविद्यालय, हथकरघा सर्वत्र खिले।
लोकोद्धारक विद्यासागर, सूरि कृपा मृदु सौख्य फले ॥5॥

समयसार के प्राण हो, मूलगुणों की श्वास।

विद्यासागर सूरि पर, है सबको विश्वास ॥
वीतरागता का वतन, सत्य अहिंसा धाम।
जिनशासन की शान का, विद्यासागर नाम ॥

ओं ह्रूँ षट्त्रिंशद्गुणसमन्वितसंतशिरोमणि-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

●●●

## निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी का अर्घ

ज्ञानोदय छन्द

ज्ञानसागराचार्य देव से, महाकाव्य उद्यान खिला,
जिसमें वीर जयोदयादि से, अहिंसादि का ज्ञान मिला।
ज्ञान गन्ध दिश दिश पहुँचाते, पवन समान सुधासागर,
निर्यापक पद भूषित मुनिवर, जयवन्तो भारत भूपर ॥
विद्यासागर गणीश गुरु ने, मूकमाटी महाकाव्य दिया,
जिस पर भारतीय बुधजन ने, बहु आयामी शोध किया।
आगम श्रुत पर गुरु ग्रन्थों पर, जो संगोष्ठी करते हैं,
ऐसे पूज्य सुधासागर मुनि, निर्यापक को नमते हैं ॥

ओं ह्रः श्रुतगुरुभक्तिरतनिर्यापकश्रमणमुनिपुंगवश्रीसुधासागरजी मुनीन्द्राय अर्घं।

●●●

## गुरु संयम आरती

आओ विद्यासागर जी दरबार-2
धन्य बनो संयम से आरती उतार-2 ॥ध्रुव॥
आषाढ़-मासी सित पंचमी को,
विद्याधर ने यौवन तट को-2
तप की नौका में-2 बैठ किया पार।
धन्य बनो................................॥1॥
बाईस वर्ष में दीक्षा लेके,
छब्बीस वर्ष में आचार्य बनके-2

ज्ञानसागर की-2 समाधि सम्हार।
धन्य बनो................................ ॥2 ॥
उन्नीस सौ अड़सठ तीस जून बेला,
मुनि दीक्षा पायी, अजमेर मेला-2
विद्याधर जी ने-2 मुनि व्रत धार।
धन्य बनो.............................. ॥3 ॥
मगसिर असिता तिथि दोयज को,
सन् उन्नीस सौ बाहत्तर को-2।
नसीराबाद में-2 गुरु पद धार।
धन्य बनो.............................. ॥4 ॥
दक्षिण भारत का उजयारा,
सब जग का हरता अँधयारा-2
लाखों भक्तों के-2 गगन का सितार।
धन्य बनो................................ ॥5 ॥
आचार्यश्री विद्यासागर का,
उज्ज्वल चारित प्रतिपल सबका-2
आज खोल रहा-2 मोक्ष पंथ द्वार।
धन्य बनो............................... ॥6 ॥
आचार्यश्री ने गुरुकुल बनाया,
गुरु ज्ञानसागर का वचन निभाया-2
गुरु संघ सहित-2 करें मृदु विहार।
धन्य बनो................................ ॥7 ॥

Since 1973

*Computer Re-Setting by :*

*Jeetendra Patni*

M. 98290 71922

20.06.2020